B.A. (Hons) Part I
Philosophy Paper II (1)

Topic दर्शन और धर्म के बीच संबंध

Dr. Sachidanand Prasad
Dept. of Philosophy
R.R.S. College, Mokama

दर्शन के संबंध में यह कहा गया है कि दर्शन समग्र विश्व तथा जीवन से संबंधित कुछ मूलभूत समस्याओं के समाधान का एक प्रयास है। दर्शन के अंतर्गत मानव जीवन और अनुभव का समग्रता में अध्ययन किया जाता है। धर्म को भी जीवन की कुछ मूलभूत समस्याओं के समाधान से संबंध है और वह भी इन समस्याओं के समाधान खोजता है। उसकी समस्याएँ भी व्यवहारिक ढंग की होती है और इनके समाधान के लिए कुछ हद तक समग्र विश्व तथा जीवन से संबंधित मूलभूत प्रश्नों को समझने की भी आवश्यकता धार्मिक व्यक्ति को पड़ती है परन्तु इसका यह समझना बौद्धिक नहीं होता है बल्कि बहुत हद तक आस्था, विश्वास आदि पर आधारित होता है। मानव सीमित जीवन

(2)

और उसकी अनेकों व्यवहारिक समस्याओं को देखकर मनुष्य स्वभावतः अपने समग्र जीवन से संबंधित कुछ मूलभूत समस्याओं से आक्रान्त हो जाता है। जैसे- जीवन का असली रूप क्या है? उसका अधिष्ठाता कौन है? उसका अंत क्या होगा? विश्व की अनेकों समस्याओं के साथ कैसे पार पाया जायेगा? क्या मृत्यु ही जीवन का अंत है या उसके बाद भी कुछ है? जीवन की कठिनाइयों में, दुःख-कष्ट तकलिफ में उसका कोई सहायक होगा या नहीं? इन सारी समस्याओं से आक्रान्त मानव संपूर्ण विश्व तथा जीवन के प्रति अपनी सरल आस्था के आधार पर एक दृष्टिकोण निर्धारित कर लेता है। यह दृष्टिकोण किसी भी प्रकार का हो सकता है परन्तु जिसे हम साधारणतः धार्मिक दृष्टिकोण कहते हैं जो आध्यात्मिक होता है। इसप्रकार यह कहा जा सकता है कि समग्र विश्व तथा जीवन के प्रति एक निश्चित आस्था या दृष्टिकोण के आधार पर निर्धारित एक निश्चित जीवन पद्धति धर्म है। जितने भी प्रचलित धर्म हैं उनके कुछ निश्चित आस्थाएँ हैं।

दर्शन और धर्म के बीच

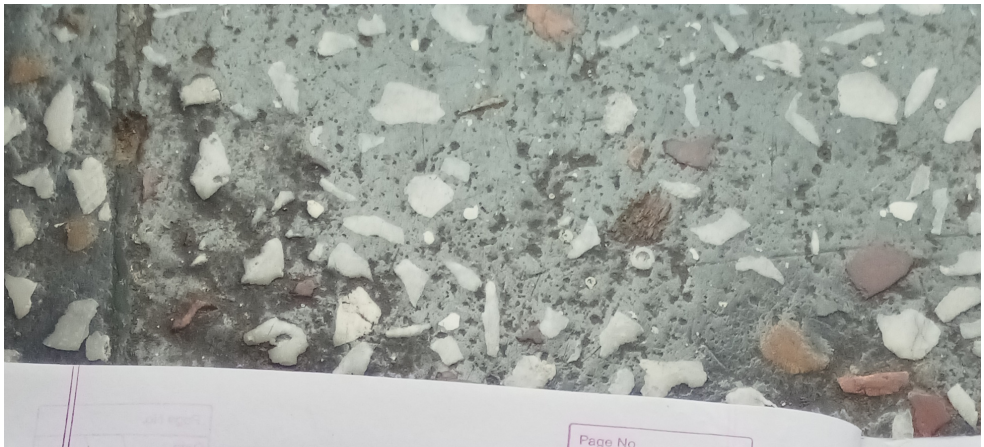

③

उपरोक्त समानताओं के साथ ही साथ कुछ अन्तर भी है। धर्म भी दर्शन की तरह विश्व तथा जीवन को उनकी समग्रता मे समझने का प्रयास करता है परन्तु ऐसा वह बौद्धिक चिन्तन के आधार पर नही करता बल्कि साधारण आस्था के आधार पर उनके संबन्ध में एक दृष्टिकोण निर्धारित करता है। फिर इसके पीछे धर्म का लक्ष्य भी व्यवहारिक होता है - वह जीवन की व्यवहारिक समस्याओं का समाधान चाहता है, दर्शन की तरह जिज्ञासा की शान्ति नही। दर्शन का उदय ही जिज्ञासा से होता है परन्तु धर्म का जीवन संबंधि कुछ व्यापक आवश्यकताओं से है यही कारण है कि धार्मिक व्यक्ति समस्याओं का बौद्धिक समाधान कर एक संगत विश्व दृष्टि के निर्माण मे व्यस्त नही रहता बल्कि अपनी सरल के आस्था के अनुरूप अपनी जीवन पद्धति बना लेता है और उसी के द्वारा अपनी व्यवहारिक समस्याओं पर विजय प्राप्त करना चाहता है। इसप्रकार हमलोग यह देखते है कि दर्शन तथा धर्म एक ओर से भिन्न है फिर भी एक ओर से निकटता भी रखते है।